"ग्रामीण" स्कील गुरूकुल

जिला प्रशासन गुमला एवं PanIIT Alumni Reach for India *का एक प्रयास*

(सहयोग: NABARD, CII & HINDALCO)

नागरिकता एवं मानवीय शक्ति के उन्नयन की पाठशाला,"गुरूकुल, गुमला"

झारखण्ड राज्य के आर्थिक रूप से पिछड़े, अत्यन्त गरीब जनजातियें आबादी बहुल्य जिला गुमला की 95% आबादी ग्रामों में निवास करती है। जिनके आय का मूल श्रोत एक मात्र वर्षा आधारित एकल फसली खेती एवं अनियमित तथा असंगठित वन उत्पाद है, जो जीवन यापन की मूलभूत जरूरतों को पूर्ण करने के लिए भी पर्याप्त नहीं है। जिले में किसी प्रकार का उद्योग स्थापित नहीं है। विशुनपुर एवं घाघरा प्रखण्ड के पाट क्षेत्रों में यद्यपि बाक्साइट खनन् का कार्य होता है, परन्तु यह खदान भी कुछेक अकुशल श्रमिकों को ही रोजगार देने में सक्षम है।

जिले में दक्षता निर्माण संस्थानों का पूर्णत अभाव है। फलस्वरूप स्वरोजगार के द्वारा भी ग्रामीण अपनी आर्थिक किस्मत बदलने में सक्षम नहीं हो पा रहें है। बेरोजगारों अथवा अर्द्धरोजगारों की निरन्तर बढ़ती आबादी मूलभूत आवश्यकताओं कि पूर्ति करने के लिए संघर्षरत् है। ऐसे में निर्धन एवं भोले–भाले ग्रामीणों, विशेषकर युवावर्ग को, समाज की मूल धारा से बहकाकर अनैतिक एवं गैरकानूनी गतिविधियों से जोड़ने में संलग्न असमाजिक एवं स्वार्थी तत्वों पर अंकूश लगाना अत्यन्त कठिन था।

ऐसे चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों एवं गलाकाट गरीबी चक्र को तोड़ना व्यापक पैमाने पर रोजगार एवं स्वरोजगार के हथियार से ही सम्भव था। इन्ही पृष्ठ भूमियों में जिला प्रशासन द्वारा समाज से भटके युवाओं को समाज की मूल धारा में जोड़ने हेतु एक ऐसे संस्थान की परिकल्पना की जो युवाओं को नागरिकता एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाने के साथ–साथ बेहत्तर एवं सुनिश्चित रोजगार भी मुहैया कराकर समाजिक एवं आर्थिक परिवर्त्तन में सहायक बन सकें। इन्ही परिकल्पना को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से दिनांक 28.09.11 से जिले के रायडीह प्रखण्ड के सिलम में "ग्रामीण स्कील गुरूकुल" की Pan IIT Aluminni Reach for INDIA के सहयोग से औपचारिक शुरूआत की गयी जिसका विधिवत् उद्घाटन दिनांक 21.01.12 को मा0 मुख्यमंत्री झारखण्ड श्री अर्जुन मुण्डा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इसके संचालन हेतु सरकारी पदाधिकारियों के साथ–साथ CII, PARFI, NABARD, HINDALCO के व्यवसायिक प्रतिनिधियों की संचालन समिति गठित की गयी है।

सर्वप्रथम् गुरूकुल फेज–1 में संचालित ग्रामीण स्कील कन्स्ट्रक्शन गुरूकुल की गतिविधियाँ :–

नागरिकता एवं अनुशासन हेतु पहल् – गुरूकुल में पारम्परिक गुरूकुल के गुरू एवं शिष्य परम्परा के तहत् सात्विक एवं अनुशासित जीवन का पाठ पढ़ाया जाता है। सभी प्रशिक्षणार्थी नित्य प्रातः 4.30 बजे उठते है तथा नित्यकर्म के पश्चात् योगासन करते है। इसके पश्चात् राष्ट्रीय ध्वज के तले राष्ट्रीय गान एवं सलामी परेड में शामिल होते है। तत्पश्चात् विभिन्न प्रखण्डों से आये प्रशिक्षणार्थी परस्पर सहौदपूर्ण वातावरण में प्रातः 7.00 बजे से प्रारम्भ होने वाली प्रशिक्षण कक्षा में शामिल होते है।

सुनिश्चित रोजगार के अवसर के अनुरूप क्षमताबर्द्धन प्रशिक्षण – गुरूकुल के प्रथम फेज में चयनित युवाओं की क्षमता, इच्छा एवं रोजगार के सृजित अवसर के अनुरूप राजमिस्त्री, सरियॉ बाधने या सटरिंग कार्य का व्यवसायिक प्रशिक्षण 45 दिनों तक दिया जाता है।

गुरूकुल हेतु चयन के साथ ही चयनित प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षणोपरान्त कहाँ रोजगार दिलाया जायेगा, इसकी जानकारी एवं नियोक्ता कम्पनी/फर्म का औपबन्धिक नियुक्ति पत्र दे दिया जाता है। यह प्रशिक्षण निशुल्क नहीं है। बल्कि निर्धन युवाओं को प्रशिक्षण शुल्क हेतु नाबार्ड के माध्यम् से 6500/– रू0 का ऋण मुहैया कराया जाता है जिसका समायोजन उनके नियोजनोपरान्त् नियोक्ता कम्पनी से प्राप्त होने वाली आय से किस्तों में किया जाता है। फलस्वरूप गुरूकुल का प्रवेशद्वार केवल जरूरतमंद निर्धन युवाओं को ही आमंत्रित करता है।

गुरूकुल की अन्य गतिविधियाँ –

प्रशिक्षणार्थियों के सम्पूर्ण शारिरिक एवं मानसिक विकास हेतु प्रकृति अनुकुल वातावरण में आवासन व्यवस्था, खेलकूद, दुरदर्शन एवं नेट व्यवस्था भी गुरूकुल के प्रशिक्षणार्थियों को सुलभ होता है।

गुरूकुल अपने अल्पावधि में ही प्रशिक्षित 33 युवाओं को TCS भुवनेश्वर में (प्रथम बैच) तथा 42 युवाओं को HHIPL, विशाखपतनम् में (द्वितीय बैच) रोजगार मुहैया करा चूका है। तृतीय बैच के 45 युवाओं को प्रशिक्षणोपरान्त् दिनांक : 21.06.12 को HHIPL, विशाखपतनम भेजा जायेगा। इतना ही नहीं गुरूकुल संचालन समिति के सदस्य नियोजित युवकों के स्थिति की जानकारी लेने हेतु समय–समय पर नियोक्ता कम्पनी का दौरा भी करते है। नियोक्ता कम्पनी में गुरूकुल के लड़कों की अल्पावधि में ही समर्पित एवं अनुशासित कर्मी के रूप में पृथक पहचान स्थापित हो जाना गुरूकुल स्थापना के मूल उद्देश्य को उर्जान्वित करता है।

"दक्षता एवं संस्कार निर्माण के इस पहल् से आयी परिवर्त्तन के कुछेक दृष्टान्त"

नाम –श्री विजय कुमार उरॉव
उम्र–19 वर्ष
ग्राम+प्रखण्ड–घाघरा, गुमला

आर्थिक तंगी के कारण 5वीं कक्षा के बाद स्कुली शिक्षा छोड़ने को विवश श्री विजय कुमार उरॉव के परिवार की कृषि से वार्षिक आय मात्र 28,000/– रू0 थी। गरीबी के कारण पूरे परिवार को किसी प्रकार सालोभर मात्र दो वक्त का भोजन ही सुलभ था, जिसके लिए भी इन्हें पढ़ाई छोड़कर बॉक्साईट माईन्स एवं ईट भट्ठा में ढुलाई संबंधी मजदूरी करना पड़ता था। इससे प्रतिदिन 100 से 120 रू0 की आय होती थी, परन्तु यह भी नियमित नहीं थी। बीमारी एवं प्रकृतिक मार इस परिवार के लिए दर्दनाक स्थिति उत्पन्न कर देता था।

इन्ही विकट परिस्थितियों में प्रखण्ड की बैठकों के माध्यम् से श्री उरॉव को गुरूकुल की जानकारी मिलना आशा की एक नई किरण उत्पन्न कर गया। इसके पश्चात् प्रखण्ड के माध्यम् से गुरूकुल में दाखिला एवं सफलतापूर्वक 45 दिनों का सरियॉ बॉधने का प्रशिक्षण प्राप्त कर आज श्री विजय एस0पी0 ग्रुप की टी0सी0एस0, भुवनेश्वर में असिस्टेन्ट वारबेन्डर के रूप में नियुक्त है। आज प्रतिमाह मासिक एवं ओवरटाईम से मो0 : 7,500/– रू0 आय अर्जित कर मासिक बचत एवं अपने परिवार को आर्थिक मद्द कर रहे है।

नाम – श्री वन्दें उरॉव
उम्र– 23 वर्ष
ग्राम : लापू, प्रखण्ड : विशुनपुर, गुमला

वन्दे उरॉव अत्यधिक निर्धन परिवार से है तथा कृषि योग्य अत्यधिक कम भूमि के कारण घर चलाना अत्यधिक कठिन था। घर का बड़ा लड़का होने तथा दो छोटी बहनों की जिम्मेवारी के दबाव में पढ़ाई छोड़कर मजदूरी करने के लिए उन्हें विवश होना पड़ा। प्रायः माह में 10–15 दिन का ही काम मिल पाता था परन्तु घर की जरूरत इससे काफी अधिक की थी। कई बार संवेदकों द्वारा काम कराने के बाद भी मजदूरी नहीं दिया जाता या मजदूरी देने में काफी विलम्ब कर दिया जाता था, जिससे परिवार के लिए कई बार खाना भी मुहैया नहीं हो पाता था।

श्री वन्दे प्रखण्ड रायडीह के सिलम में स्थापित गुरूकुल के बारे में जानकारी मिलने पर स्वतः प्रेरणा से जाड़े के मौसम केवल शरीर पर पहने कपड़े के अतिरिक्त बिना किसी अन्य सामान के गुरूकुल पहुॅच गये। श्री वन्दे उरॉव ने अत्यधिक गम्भीरतापूवर्क 45 दिनों का आवासीय प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया। प्राचार्य, गुरूकुल, गुमला ने भी वन्दे उरॉव को अभी तक गुरूकुल में प्रशिक्षित सर्वश्रेष्ठ शिष्य में से एक माना है। वे वर्त्तमान में टी0सी0एस0, भुवनेश्वर में कार्यरत् है तथा प्रत्येक माह 7,500/– रू0 आय अर्जित कर रहे है। श्री वन्दे उरॉव के अनुसार अब अपने बहनों को पढ़ा–लिखाकर स्वावलम्बी बनाने का उनका सपना जरूर पूरा होगा।

नाम – बलगोविन्द साहु,
उम्र– 31 वर्ष
ग्राम – वनागुट्टू, प्रखण्ड – बसिया गुमला

शादी–शुदा बालगोविन्द साहु के पास कृषि योग्य छोटी भुखण्ड से साल भर में मात्र 2 क्विंटल धान का उत्पादन ही हो पाता था। अतः जीवन निर्वाह करने हेतु मजदूरी करने पर विवश था। परन्तु मजदूरी से भी नियमित आय नहीं होने के कारण अत्यधिक तंग हाल में जीवन–यापन कर रहा था। अपनी परिस्थिति बदलने को चिन्तित बालगोबिन्द साहु को प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, बसिया से गुरूकुल के बारे में जानकारी प्राप्त हुई, वह तुरन्त गुरूकुल के प्रथम बैच में राजमिस्त्री के प्रशिक्षण हेतु शामिल हो गया। प्रशिक्षणोरान्त आज टी0एस0सी0, भुवनेश्वर में राजमिस्त्री का कार्य कर 7,000/– रू0 मासिक आय अर्जित कर रहा है। अब उसके उद्देश्यहीन जीवन में नये सपने पलने लगे है।

नाम – नरेश प्रधान,
उम्र : 19 वर्ष, ग्राम : वानागुट्टू,
ग्राम – वनागुट्टू, प्रखण्ड – बसिया गुमला

छोटी उम्र में पिता के स्वर्गवास के बाद एक छोटी बहन एवं एक छोटे भाई का दायित्व इनके सिर आ गया। फलस्वरूप 12वीं तक पढ़ाई करने के उपरान्त घर की जिम्मेवारी उठाने हेतु मजदूरी करने पर विवश हो गया। श्री प्रधान का जीवन पूर्णतः दिशाहीन हो चूका था उनके अनुसार तमाम प्रयासों के बावजूद नियमित रूप से एक समय का खाना ही पूरे परिवार को मिल पाता था। इन्ही गरीबी के मारे के कारण अपनी 4,000/– रू0 की बकरी को मात्र 1,500/– रू0 में बेचना पड़ा था। अतः वह किसी अन्य ऐसे कार्य की तलाश में था जो उसके परिवार को नियमित आय दिला सके। श्री नरेश की यह तलाश गुरूकुल, गुमला में दाखिला के साथ समाप्त हुआ। आज गुरूकुल में प्रशिक्षणोपरान्त टी0सी0एस0, भुवनेश्वर में कार्यरत् है तथा प्रत्येक माह 7,000/– रू0 आय अर्जित कर रहा है। बालगोविन्द अपनी वर्तमान आय को बढ़ाने हेतु ओवरटाईम में भी कड़ी मेहनत कर रहा है, ताकि पुनः उसके जीवन में गुरूकुल से पूर्व की कहानी न दोहराई जा सके।

नाम – मरोज उरॉव,
उम्र–24 वर्ष,
चेटर, गुमला

10 वीं पास तथा खेलकूद में अत्यधिक कुशल मनोज उरॉव दुर्भाग्यवश अपने माता–पिता के स्वर्गवास के पश्चात् अपने बड़े भाई की मद्द हेतु कृषि कार्य एवं मजदूर कार्य करने पर विवश हो गया। परन्तु इससे होने वाली आय अस्थिर एवं जरूरत के अनुपात में काफी कम थी।

ऐसे में गुरूकुल की जानकारी इनके जीवन में नयी सुबह लेकर आयी। आज बारवेडिंग के सफल प्रशिक्षोपरान्त TCS, *भुवनेश्वर में सरिया बॉधने की नौकरी कर रहा है। अल्प अवधि में ही वह* TCS, *भुवनेश्वर के बारवेन्डर ग्रुप का लीडर बन गया है। प्राचार्य गुरूकुल के अनुसार मनोज उनके तमाम शिष्यों में अत्यधिक कुशाग्र बुद्धि वाला एवं समझदार प्रशिक्षणार्थी था। उसमें सीखने की तीव्र लालसा एवं कार्य के वारिकियों को शीघ्र समझने की क्षमता थी। ऐसे में मनोज का अपने कम्पनी में बारवेन्डर ग्रुप का लीडर बन जाना आश्चर्यजनक नहीं है।*

श्री मनोज के कार्य के प्रति समर्पण के कारण अपनी नियुक्ति के बाद अभी तक वह एक दिन भी कार्य से अनुपस्थित नहीं रहा है। वर्तमान में 7,000/– रू0 मासिक आय अर्जित कर रहा है। परन्तु उसका क्रमबद्ध सपनों में पहला सपना कड़ी मेहनत कर इसी कम्पनी में शीघ्र तरक्की प्राप्त करना है।

नाम – श्री मनोज उराँव,
उम्र– 18 वर्ष
ग्राम – बांसडीह
प्रखण्ड – रायडीह, गुमला

श्री मनोज अबतक गुरूकुल आयें अभ्यार्थियों में सबसे निर्धण उम्मीदवार था। मनोज जाड़े के मौसम में केवल गंजी एवं पैन्ट पहने बिना किसी सामान के गुरूकुल आया था। इस अत्याधिक संकोची शिष्य को पूर्ण सहजता से प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया गया। प्रशिक्षण के दौरान वह बीमार भी पड गया परंतु गुरूकुल में उसे तुरंत डॉक्टरी सेवा सुलभ कराया गया और वह ठीक भी हो गया। गुरूकुल के प्रशिक्षण दल द्वारा उसे प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दिया जाता था। परंतु मनोज उराँव सदैव चुपचाप रहता था तथा अत्याधिक संकोची स्वभाव का लडका था। उसमें आत्मविश्वास की अत्याधिक कमी थी। जिसके कारण वह प्रशिक्षण छोड़ बीच में ही गुरूकुल से अपने घर वापस चला गया। परन्तु जल्द ही मनोज को अपने भूल का एहसास हुआ और पुनः स्वंय गुरूकुल आकर अपने कृत की क्षमायाचना करते हुए प्रशिक्षण में शामिल करने का अनुरोध किया। प्राचार्य, गुरूकुल द्वारा मनोज की पृष्ठ भूमि को ध्यान में रखते हुए पुनः प्रशिक्षण कक्षा में न केवल शामिल किया बल्कि उसके खोये आत्मविश्वास को जागृत कर प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया।

आज मनोज सफलतापूर्वक प्रशिक्षणोपरान्त् HHIPL, विशाखपतनम में कार्यरत् है और प्रतिमाह 6,500/– रू0 आय अर्जित कर रहा है। हतोत्साहित एवं संकोची मनोज जो कभी प्रशिक्षण छोड़कर भाग गया था आज अपने पदस्थापन स्थल से कभी भी छुट्टी नहीं लेता है तथा घर वापस जाने के स्थान पर अपने कार्यस्थल पर टीक कर अधिक से अधिक मेहनत करने की बात करता है।

नाम – श्री अनिल तिर्की, उम्र– 25 वर्ष
ग्राम – सुरजपुर,
प्रखण्ड – बसिया
गुमला

गुरूकुल के द्वितीय बैच का सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षणार्थी श्री अनिल तिर्की 55% अंक से 10 वीं कक्षा में उर्तीण होने के पश्चात् गरीबी के कारण आगे नहीं पढ़ सका। घर की माली हालत एवं दो छोटी बहनों के भविष्य संवारने की चाह में पढ़ाई छोड़कर पिता के साथ खेती में हाथ बटाने लगा। परन्तु खेती से होने वाली आय उसके गरीबी के कुचक्र को तोड़ने एवं स्वालम्बी बनाने के सपनों को पूर्ण कराने में सक्षम नहीं था।

आज गुरूकुल से प्रशिक्षणोपरान्त् अनिल HHIPL, *विशाखपतनम के कार्यस्थल पर कार्यरत् है और एक माह में ही अपने ग्रुप का लीडर बन गया है। कम्पनी के सुवरवाइजर एवं अन्य लोग अनिल के शीघ्र समझ एवं तुरन्त कार्य सम्पन्न करने की क्षमता के कायल बन गये है। आज अनिल अपने ग्रुप एवं नियोक्ता कम्पनी द्वारा उपलब्ध करायी गयी सुविधा से संतुष्ट है तथा भविष्य में इसी कम्पनी में तरक्की कर आगे बढ़ने के लिए उत्साहित है।*

नाम – विजेन्द्र कुमार भगत,
उम्र– 26 वर्ष
ग्राम – रेड़वा,
प्रखण्ड – सिसई
गुमला

विजेन्द्र कुमार भगत के परिवार में माता–पिता दो भाई एवं तीन बहन है, परन्तु खेती के अल्प आय के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है। फलस्वरूप 50% प्राप्तांक से 12 वीं उत्तीर्ण करने के बावजूद गरीबी के कारण आगे पढ़ाई जारी नहीं रख सका। ऐसे में गुरूकुल, गुमला में सटरिंग कार्य का सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण किया। प्राचार्य, गुरूकुल, गुमला के अनुसार विजेन्द्र अत्यधिक विनम्र, शीघ्र सीखने वाला उत्साहीं प्रशिक्षणार्थी रहा है। आज वह HHIPL *के विशाखापतनम् साईट पर कार्यरत् है तथा एक माह में ही अपनी कम्पनी में स्टरिंग ग्रुप का लीडर बन गया है।*

अब आगे

ग्रामीण स्कील कन्स्ट्रक्शन गुरूकुल अपने स्थापना के मात्र 6 माह में ही 120 नवयुवकों को बेहतर नागरिकता का पाठ–पढ़ाने एवं आर्थिक कुचक्र से मुक्त कराने में सफल रहा है। फलस्वरूप इसके विस्तार की अत्यधिक मांग की जा रही है। जिले में ड्राइविंग कार्य के प्रति ग्रामीण रूझान को देखते हुए गुरूकुल फेज–2 जुलाई 2012 से प्रारम्भ करने की योजना है। जिसमें हल्के मोटरयान एवं forklift Truck का प्रशिक्षण TVS Logistics Services Ltd. चेन्नई में रोजगार के अवसर के आलोक में दिलाया जायेगा। परन्तु जिले एवं राज्य में अकुशल बेरोजगार की संख्या तथा समाज के मुख्य धारा से भटके नवयुवकों को पुनः मुख्य धारा में जोड़ने की आवश्यकता के परिपेक्ष्य में यह प्रयास भी मात्र सांकेतिक ही है। समस्या के सार्थक निदान के लिए गुरूकुल, गुमला के क्षमता को दस गुणा बढ़ाने तथा राज्य के सभी जिलों में कम से कम एक–एक गुरूकुल स्थापित करना आवश्यक प्रतीत होता है।